अमर उजाला

नई दिल्ली । बृहस्पतिवार, 23 मई 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

बदला और प्रतिशोध हमेशा क्रोध, भय और हिंसा के चक्र को बनाए रखते हैं...
-कोरेट्टा स्कॉट किंग

अमेरिकी लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता

अरुणाचल के विधायक टिरोंग अबो की हत्या लंबे समय से शांत पूर्वोत्तर में नगा उग्रवादियों की सक्रियता का ताजा सुबूत है, जिससे निपटना केंद्र की नई सरकार के लिए चुनौती होगा।

पूर्वोत्तर की चुनौती

अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले में विधायक टिरोंग अबो की परिवार और सुरक्षाकर्मियों समेत की गई हत्या केवल इसीलिए चिंतित करने वाली नहीं है कि पूर्वोत्तर में लंबे समय बाद नगा उग्रवादियों ने ऐसी हिंसा को अंजाम दिया है, बल्कि यह घटना इसलिए भी गंभीर है, क्योंकि चुनावी साल में अरुणाचल के इस अशांत जिले में दो महीने में दो राजनीतिक हत्या उग्रवादियों की बढ़ती पैठ का सुबूत है। उग्रवादियों ने टिरोंग की चार गाड़ियों के काफिले को रुकवाकर अंधाधुंध गोलाबारी की, जो उनके दुस्साहस का प्रमाण है। पिछले ही साल पीपुल्स पार्टी ऑफ अरुणाचल से कोनराड संगमा की नेशनल पीपुल्स पार्टी में आए टिरोंग की छवि एक ईमानदार और सख्त राजनेता की थी, जो उग्रवादियों के खिलाफ थे, और इसीलिए पिछले दो चुनावों यानी 2009 और 2014 में भी वह उग्रवादियों के निशाने पर आए थे। इस साल भी नगा उग्रवादियों ने उन्हें चुनाव लड़ने से मना किया था। लेकिन टिरोंग नहीं माने, जिसका नतीजा मार्च में उनके एक समर्थक और अब परिवार व सुरक्षाकर्मियों समेत उनकी हत्या के रूप में सामने आया है। यह सूचना तो पहले से ही थी कि म्यांमार की सरकार द्वारा की गई कार्रवाई के कारण वहां शरण लिए हुए पूर्वोत्तर के एकाधिक उग्रवादी संगठनों की हाल के दौर में पूर्वोत्तर में मौजूदगी बढ़ी है। तिरप सहित अरुणाचल के तीन जिलों में उग्रवादियों की गतिविधि इसलिए भी अपेक्षाकृत अधिक बताई जा रही है, क्योंकि ये जिले असम, नगालैंड और म्यांमार की सीमा से लगे हुए हैं। इसके बावजूद टिरोंग की हत्या में एनएससीएन (आईएम) गुट का हाथ बताया जाना चौंकाने वाला है, क्योंकि वह हाल-हाल तक केंद्र सरकार के साथ शांति वार्ता में शामिल रहा है। उसके प्रवक्ता ने इस हत्याकांड में अपनी लिप्तता की जानकारी न होने की जैसी बात कही है, उससे भी संदेह पैदा होता है कि इसे सचमुच एनएससीएन (आईएम) गुट ने ही अंजाम दिया है या दूसरे किसी उग्रवादी संगठन ने। इस बारे में सच्चाई देर-सबेर तो सामने आएगी ही, अलबत्ता चुनाव नतीजा आने से ठीक दो दिन पहले अरुणाचल में इस हत्याकांड को अंजाम देकर उग्रवादियों ने केंद्र की सत्ता में आने वाली नई सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती तो पेश कर ही दी है।

नगा गुटों की वापसी !

अरुणाचल प्रदेश की खोंसा पश्चिम विधानसभा सीट से मौजूदा विधायक टिरोंग अबो की हत्या राजनीतिक हत्या भी हो सकती है और राज्य में उग्रवाद के फिर से सिर उठाने का संकेत भी। 42 वर्षीय अबो खोंसा पश्चिम विधानसभा सीट से दोबारा चुनाव लड़ रहे थे, जिसके नतीजे आज आने वाले हैं। यह घटना उस समय हुई, जब संदिग्ध विद्रोहियों ने अबो के वाहन पर गोलीबारी की, जो परिवार के सदस्यों, तीन पुलिसकर्मियों और एक मतदान एजेंट के साथ असम से अपने निर्वाचन क्षेत्र में जा रहे थे। हालांकि जिस स्थान पर हमला हुआ, वह इस समय सशस्त्र बलों के संरक्षण में है और वहां अफ्स्पा लागू है। लेकिन हमले के समय सशस्त्र बल वहां नहीं थे। पुलिस ने पहले ही दावा किया है कि यह हमला अरुणाचल प्रदेश के बोगापानी गांव के पास सुबह करीब साढ़े ग्यारह बजे हुआ था, जिसमें नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड (एनएससीएन) के उग्रवादियों के हाथ होने का संदेह है। स्थानीय पुलिस का कहना है कि उसे इस हमले के पीछे एनएससीएन-आईएम के हाथ होने का संदेह है।

एनएससीएन के दो गुट हैं-एनएससीएन-आईएम तथा खपलांग और दोनों ही गुट अरुणाचल प्रदेश में सक्रिय हैं। हालांकि एनएससीएन-आईएम संघर्ष विराम का पालन कर रहा है और केंद्र सरकार के साथ उसकी शांति वार्ता चल रही है। उग्रवाद को समाप्त करने के लिए नगालैंड शांति समझौते पर अगस्त, 2015 में भारत सरकार और एनएससीएन द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में सरकार की ओर से नगा शांति वार्ता के केंद्र सरकार के वार्ताकार आर एन रवि ने और एनएससीएन के महासचिव थुइंगालेंग मुइवा ने हस्ताक्षर किए थे। पिछले महीने एनएससीएन के एक टूटे हुए गुट खपलांग ने भी एक वर्ष के लिए संघर्ष विराम समझौता पर हस्ताक्षर किया। ऐसे में अगर वाकई एनएससीएन के किसी गुट का इस जघन्य हमले में हाथ है, तो यह केंद्र सरकार के लिए बेहद चिंता की बात है, क्योंकि माना जा रहा था कि एनएससीएन के साथ शीघ्र ही शांति वार्ता पूर्ण हो जाएगी और यह पूर्वोत्तर क्षेत्र में शांति स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। इस घटना से शांति प्रक्रिया को झटका लग सकता है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों तक सुगम पथ की गारंटी देने वाली ठोस लुक ईस्ट नीति को आगे बढ़ाने के सरकार के मजबूत इरादों के बावजूद ऐसी बातें स्थिरता की प्रक्रिया को पटरी से उतार देती हैं।

प्रशांत दीक्षित, सामरिक विश्लेषक

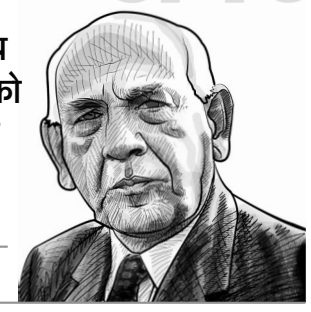

इस हमले की निंदा करते हुए एनपीपी अध्यक्ष और मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड के संगमा ने प्रधानमंत्री कार्यालय और गृह मंत्री राजनाथ सिंह के हस्तक्षेप की मांग की है, क्योंकि मारे गए विधायक नेशनल पीपुल्स पार्टी के सदस्य थे और अरुणाचल प्रदेश में मौजूदा वर्चस्व वाली पार्टी भाजपा से उनकी निभ नहीं रही थी। मौजूदा दौर में अरुणाचल प्रदेश राजनीतिक अवसरवादियों का एक बड़ा केंद्र है, जिन्होंने भाजपा के प्रति अपना आकर्षण बढ़ाने के लिए कई बार अपनी राजनीतिक निष्ठाएं बदली हैं। हो सकता है कि उन्हें भाजपा नेतृत्व ने प्रोत्साहित किया हो।

नेशनल पीपुल्स पार्टी एक राज्य स्तरीय राजनीतिक दल है, हालांकि इसका प्रभाव ज्यादातर मेघालय में है। जुलाई, 2012 में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी से अपने निष्कासन के बाद पी ए संगमा ने इस पार्टी की स्थापना की थी। जनवरी, 2013 में पी ए संगमा ने पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर लॉन्च किया। उन्होंने घोषणा की कि उनकी पार्टी भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के साथ गठजोड़ करेगी। संगमा ने यह भी दोहराया कि हालांकि पार्टी की सदस्यता सबके लिए खुली है, लेकिन यह एक जनजातीय केंद्रित पार्टी होगी। नौ बार सांसद रहे दिवंगत संगमा ने जुलाई 2012 में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी से निष्कासन के तुरंत बाद एक नई राजनीतिक पार्टी बनाने की घोषणा की थी, जब उन्होंने 2012 में राष्ट्रपति पद के चुनाव में पार्टी के निर्णय को मानने से इनकार कर दिया था। वर्तमान में यह (एनपीपी) उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय राजनीतिक मोर्चे का एक हिस्सा है, जिसमें पूर्वोत्तर के राजनीतिक दल शामिल हैं, जिन्होंने राजग का समर्थन किया है।

लेकिन 15 अक्तूबर, 2018 को भाजपा नेता और अरुणाचल प्रदेश के उप मुख्यमंत्री चोवना मेन ने घोषणा की कि 2019 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री पेमा खांडू ही पार्टी का चेहरा होंगे। चोंगखम विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के मंडल समन्वय की बैठक में बोलते हुए मेन ने पार्टी कार्यकर्ताओं से आगामी चुनावों के लिए कमर कसने को कहा था। उन्होंने कहा कि आगामी चुनाव पेमा खांडू के नेतृत्व में लड़े जाएंगे, लेकिन भाजपा अरुणाचल प्रदेश या पूर्वोत्तर में सक्रिय किसी भी पार्टी के साथ गठजोड़ नहीं करेगी। इस समग्र योजना में एनपीपी विधायक टिरोंग अबो एक गंभीर अड़चन बने हुए थे और ऐसा लगता है कि एनएससीएन समूह द्वारा उन्हें चुनाव लड़ने से परहेज करने के लिए एक चेतावनी जारी की गई थी। यह माना जा सकता है कि एनपीपी एक बाहरी राजनीतिक समुदाय था, जो अरुणाचल में प्रचारित की जाने वाली विचारधारा से नहीं, बल्कि अल्पसंख्यक ईसाई समुदाय से उभर रहा था। हालांकि इस घटना के पीछे की असली वजह तभी सामने आएगी, जब विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होंगे और इस क्षेत्र की सैन्य इकाई द्वारा हमले की जांच की जाएगी। खबरें हैं कि सैन्य इकाई इस घटना की तत्परता से जांच कर रही है।

यहां इस बात को याद करने की जरूरत है कि अतीत में केंद्र में कांग्रेस की सरकारों सहित पूर्वोत्तर में राजनीतिक हत्या और राजनीतिक हेरफेर का बहुत प्रभावी ढंग से अभ्यास किया गया है। इन सभी मामलों में उन उग्रवादी संगठनों की संलिप्तता देखी जा सकती है, जो पूर्वोत्तर में सक्रिय हैं। लेकिन एक बात का संदेह है कि सच्चाई बहुत आसानी से सामने नहीं आएगी और किसी न किसी को बलि का बकरा बनाया जा सकता है। दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों तक सुगम पथ की गारंटी देने वाली ठोस लुक ईस्ट नीति को आगे बढ़ाने के सरकार के मजबूत इरादों के बावजूद इस तरह की बातें स्थिरता की प्रक्रिया को पटरी से उतार देती हैं।

अंतर्ध्वनि

>> रघुवीर सहाय

बोलना सुनने से बड़ा है, जैसे बनाना तोड़ने से बड़ा है

बोलने में एक सुख है, कोई सुने चाहे न सुने। सुननेवाले के लिए यही बात उलट कर नहीं कही जा सकती; सुनने में एक सुख है, मगर यह तो नहीं कि वह सुख रहेगा ही, कोई बोले चाहे न बोले। इसी से बोलता हूं अर्थात कहता हूं कि बोलना सुनने से कुछ बड़ा है... जैसे किसी कवि की वह पंक्ति है...'बनाना तोड़ने से कुछ बड़ा है।' हालांकि शताब्दियों से लोग सुनने के उत्सुक चले आ रहे हैं। और इस दिशा में सबसे अधिक उपलब्धि उन कवियों को हुई है, जो इधर सृष्टि का निखिल मौन संगीत सुनते रहे, प्रेमिका का मूक स्वरों में अनुरोध भी। और आज तो हमें कोई सौ बातें सुनाता है, कोई सुना-सुनाकर कुछ कहता है और हमारी कहीं सुनवाई नहीं होती। फिर भी हम अनुरोध करते हैं, 'बोलो प्रभु, कब सुनोगे।' यह इसीलिए कि हम सुनने के आदी हो गए हैं और सुनना हीन है, बोलना श्रेष्ठ।

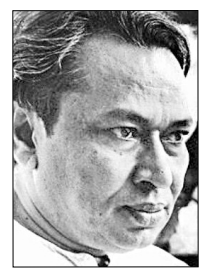

सुनते हैं, मौन रहना स्वास्थ्यदायक भी होता है। मौन-व्रत रखने से वृथा नष्ट होनेवाली शक्ति संचित होती है। जब मन अविश्वास और विफलता से दुर्बल हो उठे, तब मौन ही शक्ति देता है। और मौन रहने का कारण यदि यह हो कि समझ में नहीं आता क्या कहें, तो थोड़ी देर मौन रहकर सोच ही लेना अच्छा है कि क्या कहें। परंतु यदि मौन रहने का कारण यह है कि 'साइलेंस इज गोल्ड' तो यह जान लीजिए कि बिना जरूरत बोल पड़ने का पश्चाताप उतना कभी नहीं होता, जितना जरूरत होते हुए चुप रह जाने का। मन पछताया करता है कि मैंने यह क्यों नहीं उस समय कहा। यह इसीलिए कि बोलना ही हमारा श्रेष्ठ कर्तव्य है, अभिव्यक्ति का सरलतम माध्यम भी है, और न बोलकर हम रह नहीं सकते, आप न सुनें, वह तो सुनेंगे।

-दिवंगत हिंदी कवि

मंजिलें और भी हैं

>> महेश आर वी

बाल कुपोषण दूर करने वाला इंजीनियर

मैं कर्नाटक में रहने वाला एक बायोटेक इंजीनियर हूं। वह 2009 की बात है। तब मैं बंगलूरू के पीईएस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में फाइनल ईयर का छात्र था। मैं फॉरेंसिक साइंस में लघु शोध करने की तैयारी कर ही रहा था कि उसी दौरान कुपोषण पर कई सारी रिपोर्टें मैंने पढ़ीं। मैंने पढ़ा कि देश के 42 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं, जो राष्ट्रीय शर्म है। कहां तो मैं इंजीनियरिंग का छात्र था और कहां फाइनल ईयर में मेरे जीवन का फोकस अचानक बदल रहा था। मैं जान रहा था कि भीषण गरीबी, अशिक्षा, कम उम्र में शादी, दूरस्थ इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, साफ-सफाई के प्रति जागरूकता की कमी तथा पोषक आहारों के प्रति पहुंच न होना कुपोषण के कारण हैं। मुझे लगा कि इंजीनियर बनकर मैं तो अपने जीवन का लक्ष्य पूरा कर लूंगा। लेकिन इसके बजाय अगर मैं बाल कुपोषण दूर करने की दिशा में काम करूं, तो इससे देश के असंख्य बच्चे लाभान्वित होंगे।

कुपोषण की काट ढूंढते हुए मुझे स्पिरुलिना के बारे में पता चला। यह नीले-हरे रंग का शैवाल है, जिसे डाइट सप्लीमेंट के तौर पर लिया जाता है। मैं इस क्षेत्र में काम करने के बारे में सोच ही रहा था कि अचानक रास्ता निकल आया। सेंट्रल फूड टेक्नोलॉजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएफटीआरआई) में, जो खाद्य के क्षेत्र में देश का प्रतिष्ठित शोध संस्थान है, मुझे शोध करने का अवसर मिल गया। वहां छह महीने के शोध के दौरान मुझे पता चला कि मात्र एक ग्राम स्पिरुलिना में एक किलोग्राम फल या सब्जी के बराबर की पोषण क्षमता है। स्पिरुलिना की इस पोषण क्षमता के कारण ही अंतरिक्ष यात्रियों को इसे पूरक खाद्य (डाइट सप्लीमेंट) के तौर पर दिया जाता है।

कुपोषण पर रिपोर्टें पढ़ने के बाद मैं इंजीनियर बनने के बजाय कुपोषण दूर करने में जुट गया।

शोध कार्य समाप्त होने के बाद मैंने स्पिरुलिना फाउंडेशन नाम से एक संस्था का गठन किया और अपने घर के पिछवाड़े स्पिरुलिना उगाने लगा। इसे ताजा और खारे पानी, दोनों में उगाया जा सकता है। दूसरी वनस्पतियों की तरह इसे भी सूर्य की रोशनी में प्रकाश संश्लेषण विधि से उगाया जाता है। यह बिल्कुल प्राकृतिक होता है। मैं साल में करीब डेढ़ टन स्पिरुलिना उगाता हूं। स्पिरुलिना की लागत बहुत ज्यादा नहीं आती, क्योंकि यह अधिक जगह नहीं घेरता। एक्वेरियम में भी इसे उगाया जा सकता है।

मेरी कुल आठ लोगों की टीम है। हम स्पिरुलिना को सुखाकर पीस लेते हैं, फिर इसके कैप्सूल बनाते हैं। कुपोषित बच्चों को हम ये कैप्सूल मुफ्त में देते हैं, जबकि अन्य लोगों को 120 कैप्सूल तीन सौ रुपये में बेचते हैं। तीन महीने तक अगर रोज एक ग्राम स्पिरुलिना का सेवन किया जाए, तो कुपोषण खत्म हो जाता है। मेरा लक्ष्य मुनाफा कमाना नहीं है। 2010 में मैंने तमकुर जिले के एक अनाथालय में स्पिरुलिना के कैप्सूल बांटकर अपनी परियोजना की शुरुआत की थी। तीन महीने बाद वहां के बच्चों का हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ गया था। एक साल बाद राज्य के महिला और बाल विकास मंत्रालय ने मेरे काम को सराहा, तो तुमकुर, हासन और रायचूर जिलों में इस कार्यक्रम को विस्तार देने में सरकार ने मेरी मदद ली। राज्य के ये तीनों जिले कुपषण के मामले में कुख्यात हैं। उसके बाद कम से कम बीस संस्थाओं ने, जिनमें एनजीओ से लेकर कॉरपोरेट हाउस तक हैं, स्पिरुलिना उत्पादन बढ़ाने में मुझे आर्थिक मदद दी। अभी तक मैंने देश के 250 शहरों और गांवों में स्पिरुलिना के साठ लाख कैप्सूल बांटे हैं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

हारे हुए मन की त्रासदी

मलयेशिया में एक किशोरी ने इंस्टाग्राम पर पूछा कि क्या उसे मर जाना चाहिए या नहीं। जवाब में 69 फीसदी ने कहा- हां, तो किशोरी ने अपनी जान ले ली। कहा जा रहा है कि किशोरी की मौत के पक्ष में वोट देने वालों पर उसे आत्महत्या के लिए उकसाने का दोष लगाकर मुकदमा चल सकता है। पर अपने ही देश में मौत को गले लगाने वाले जेएनयू के छात्र थॉमस के बारे में दावा है कि उसने बिना किसी उकसावे के सिर्फ मौत का रहस्य जानने के लिए अपनी जान दे दी। पुलिस ने बताया कि विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में पंखे से लटककर जान देने से पहले थॉमस ने अपने प्रोफेसर को ईमेल किया, जिसमें मृत्यु को साक्षात (फिजिकल फॉर्म में) देखने की इच्छा जताई गई थी। साल भर पहले दिल्ली के बुराड़ी इलाके में परिवार के 11 लोगों की आत्महत्या के पीछे भी यह दावा किया गया था कि उन्हें लगता था कि वे मौत के रहस्य को जान लेंगे और इस दुनिया में फिर से वापस आ जाएंगे।

समाजशास्त्रीय नजरिये से ये घटनाएं असल में दुनिया में बढ़ते अवसाद (डिप्रेशन) की मिसालें हैं। बेरोजगारी, नौकरी में असंतोष, परिवारों में कमाई को लेकर असंतुष्टि ऐसे-ऐसे अवसाद पैदा कर रही है कि कुछ मामलों में तो इसके घेरे में आया व्यक्ति अपने से ज्यादा दूसरों को नुकसान पहुंचाने का सबब बन जाता है। कुछ वर्ष पूर्व (2015 में) तेलंगाना में 26 साल के एक सिख युवक बलविंदर ने तलवार से 22 लोगों को घायल कर दिया था। उस पर काबू पाने के लिए पुलिस को गोली चलानी पड़ी, जिसमें वह मारा गया। पता चला था कि तेलंगाना के करीमनगर कस्बे

अवसाद के कारण आत्महत्या के मामले बढ़ रहे हैं। बेरोजगारी, नौकरी में असंतोष, परिवारों में कमाई को लेकर असंतुष्टि ऐसे अवसाद पैदा कर रही है कि कुछ मामलों में तो इसके घेरे में आया व्यक्ति अपने से ज्यादा दूसरों को नुकसान पहुंचाता है।

मनीषा सिंह

का निवासी बलविंदर पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। शानदार वेतन पाने के बावजूद वह इसलिए अवसादग्रस्त हो गया था, क्योंकि सिविल सर्विस परीक्षा में वह नाकाम हो गया था। कुछ ऐसा ही हादसा देश के हरियाणा राज्य में नरेश धनखड़ नाम के शख्स के मामले में घटित हुआ। नरेश ने अवसादग्रस्त होकर हरियाणा के पलवल में छह लोगों को मार डाला था।

भारत जैसे आबादी बहुल देश के लिए ऐसा अवसाद एक बड़ी समस्या है, क्योंकि यहां बेरोजगारी की दर काफी अधिक है। बेरोजगारी और नौकरी की अंदरूनी दिक्कतों के कारण जो समस्या पैदा हो रही है, उससे संबंधित एक आंकड़े का खुलासा कुछ वर्ष पूर्व तत्कालीन गृह राज्यमंत्री हरिभाई पारथीभाई चौधरी ने देश की संसद में किया था। उन्होंने राज्यसभा को बताया था कि वर्ष 2014 में रोजगार संबंधी समस्याओं के चलते प्रत्येक दिन करीब तीन लोगों ने आत्महत्या की। उस वर्ष व्यवसाय और रोजगार से जुड़ी समस्याओं के कारण घोर निराशा में घिरे 903 लोगों ने आत्महत्या की थी। हालांकि देश में कई अन्य कारणों से आत्महत्या करने वालों की तादाद भी बढ़ रही है। अवैध संबंधों के संदेह में या समाज में बदनामी के कारण और प्रेम प्रसंगों में मिली नाकामी की वजह से भी हर साल कई हजार युवा मौत को गले लगा रहे हैं।

देश में आत्महत्या के बारे में जो आंकड़े खुद सरकारी एजेंसियां जारी करती हैं, वे इसलिए ज्यादा चौंकाते हैं, क्योंकि अब महिलाओं के मुकाबले पुरुष ज्यादा बड़ी तादाद में ऐसा कर रहे हैं और इनमें भी बेरोजगारी झेल रहे युवाओं का प्रतिशत सबसे ज्यादा है। इससे जुड़ी एक विडंबना यह भी है कि आत्महत्या का प्रतिशत देश के विकसित कहे जाने वाले राज्यों में ज्यादा है। जैसे, कि पंजाब और हरियाणा में आत्महत्याओं का प्रतिशत देश के औसत से कहीं ज्यादा है। जिस तरह से हर तीन आत्महत्याओं में एक 15 से 29 वर्ष के युवा कर रहे हैं, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि देश के युवा समाज के लिए ये रुझान खतरनाक हैं।

खुली खिड़की

सर्च इंजन का बाजार

इंटरनेट सर्च इंजन के वैश्विक बाजार में गूगल की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा है, उसके बाद बिंग का नंबर आता है और फिर याहू का।

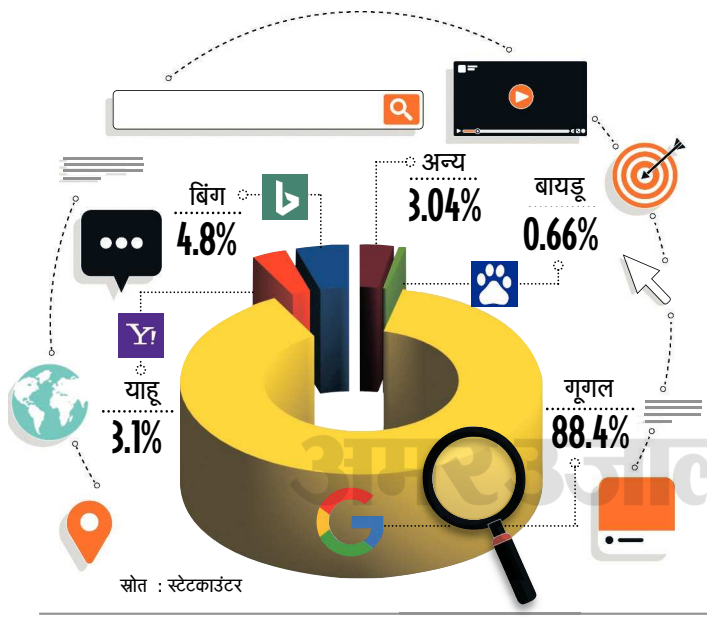

स्रोत : स्टेटकाउंटर

हरियाली और रास्ता

चॉल, कुत्ता और वह महिला

एक महिला की कहानी, जिसने अपने पालतू कुत्ते को बचाने के लिए अपनी जान दे दी।

पीयूष और उसके दोस्त एक चॉल में रहते थे। उस चॉल को नगरपालिका वाले काफी दिनों से खाली करने के लिए बोल रहे थे। चॉल के नीचे की जमीन धंस रही थी। किसी भी दिन दुर्घटना हो सकती थी। पर चॉल के लोग जाएं, तो जाएं कहां! उनके पास रहने के लिए कोई और जगह नहीं थी। जिनके पास थोड़े-बहुत पैसे थे, वे अपने परिवार को निकाल कर ले जा चुके थे। एक दिन सुबह-सुबह चॉल के एक हिस्से में भूकंप जैसा महसूस हुआ। सभी लोग बाहर निकल आए। उनमें से एक दंपति जल्दबाजी में अपने कुत्ते को घर में ही बंद कर आए। पत्नी को इसका एहसास हुआ, तो वह चॉल के अंदर जाने के लिए लपकी। लोगों ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, पर वह नहीं मानीं। वह बोलीं, वह कुत्ता नहीं, मेरा बेटा है। मुझे उसकी जान बचानी ही है। वह सभी लोगों को धक्का देते हुए चॉल में वापस चली गईं। उनके अंदर जाने के कुछ ही क्षण बाद इमारत गिर गई। पीयूष और उसके दोस्तों ने उस महिला की खूब खोज की। सबने उनको आवाजें लगाईं, लेकिन कहीं से कोई आवाज नहीं आई। अंततः एक बड़े से दरवाजे के नीच वह महिला दबी हुई मिली। पीयूष और उसके दोस्तों ने जब दरवाजा उठाया, तो देखा उस महिला का शरीर ऐसा था, जैसे किसी मंदिर में ईश्वर के सामने झुककर कोई प्रणाम कर रहा हो। हालांकि शरीर के ठंडे होने और अकड़े होने से यह यकीन हो गया था कि वह प्राण त्याग चुकी है। लेकिन पीयूष अब भी नहीं समझ पा रहा था कि वह महिला ऐसे प्रणाम करते हुए कैसे दबी। तभी पीयूष की नजर उनके पेट और पैरों के बीच पड़े उस छोटे से कुत्ते पर पड़ी। पीयूष को देख वह कुत्ता चिल्लाया, वह अभी जिंदा था। वह महिला चॉल के सभी निवासियों के लिए एक बड़ी सीख छोड़ गई थी।

मां की ममता ऐसी होती है कि अपनी जान भी छोटी लगती है।

सत्संग

राम-रावण का फर्क

रावण असाधारण मायावी था। उसे रूप बदल लेने की अनेक कलाएं आती थीं। सीता का हरण करने के लिए उसने एक साधु का वेश बनाया और भिक्षा मांगी। लेकिन सीता को खींचकर विमान में चढ़ाते ही वह अपने असली रूप में आ गया। सीता को लंका ले जाने के बाद उसने उन्हें अशोक वाटिका में रखा। सीता को पत्नी बनाने के लिए रावण ने तरह-तरह के प्रयास किए, प्रलोभन देने से लेकर धमकियों तक का सहारा लिया। लेकिन दुर्भाग्य से रावण की कोई तरकीब काम नहीं आई। वह परेशान था और खुद को अपमानित भी महसूस कर रहा था। जिसकी ताकत से सभी डरते थे, उसे एक स्त्री से हार माननी पड़ रही थी। हालांकि सीता भी कोई साधारण स्त्री नहीं थी। लेकिन जो रावण देवताओं तक को परास्त करने की ताकत रखता था, उसके लिए यह बहुत अपमानजनक था कि सीता उसका प्रस्ताव मानना तो दूर, उसकी भर्त्सना कर रही थीं। लाचार रावण ने दूसरे मायावी राक्षस कालनेमि की शरण ली। कालनेमी ने रावण को सलाह दी कि आप राम का रूप ही क्यों नहीं धर लेते? फिर सीता असलियत नहीं भांप पाएगी और आपकी मनोकामना भी पूरी हो जाएगी। रावण ने दुखी होकर कहा, यह प्रयोग करके भी मैं देख चुका हूं। जब मैं राम का रूप धरता हूं, तो बुद्धि भी वैसी ही बन जाती है। फिर न तो मैं रावण रह जाता हूं और न ही सीता के साथ राक्षस की तरह बात करने के काबिल रहता हूं।

-संकलित